जनचेतना के लिए प्रतिबद्ध

ISSN 2395-2776

प्रेमचंद पथ

जनवरी-मार्च 2023

₹100.00

जीवन का सुख
दूसरों को सुखी करने में है,
उनको लूटने में नहीं।
प्रेमचंद

संपादक
राजीव गोंड

RNI :- UPHIN/66795/2015 ISSN- 2395-2776

प्रेमचंद पथ

जनचेतना के लिए प्रतिबद्ध-त्रैमासिकी

वर्ष-**8**, अंक-**2** , पूर्णांक-**30**
जनवरी-मार्च 2023

संपादक
राजीव गोंड

संपादन परामर्श
डॉ० राम सुधार सिंह
डॉ० शुभा श्रीवास्तव

संपादन सहयोगी
श्री मेवालाल श्रीमाली

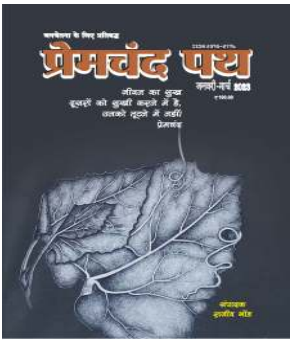

आवरण- **संजय यादव**
संपर्क- 9807746290

मूल्य :-यह अंक :- **100.00** (डाक खर्च 20रुपये अतिरिक्त)
वार्षिक :- **400.00** (डाक खर्च अतिरिक्त)
आजीवन :- **5000.00** (डाक खर्च सहित)

सदस्यता अब आनलाइन करें।
www.premchandpath.com/
सदस्यता फार्म

सदस्यता शुल्क ऑनलाईन भेजे **''प्रेमचंद पथ''** के खाता सं. **34132775691** RTGS/ NEFT, IFSC Code SBI NO011862 भारतीय स्टेट बैंक,चोलापुर, वाराणसी में जमा करें।

संपादकीय कार्यालय :-
ग्राम-लमही,पोस्ट-लमही, जिला-वाराणसी, पिन कोड-221007, (उत्तर प्रदेश)
दूरभाष :- 09721652681, 09044798756
ई-मेल :- premchandpath@gmail.com
वेबसाइट :- www.premchandpath.com

पत्रिका के सभी पद अवैतनिक है तथा लेखकों के विचार व मत अपने है जिससे संपादक का सहमत होना जरुरी नही है। विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र वाराणसी होगा। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुन: प्रकाशन के लिए अनुमति अनिवार्य है।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से सहयोग प्राप्त

स्वामी,मुद्रक,प्रकाशक उषा गोंड द्वारा सन प्रिंटिंग वर्क्स, २३ विवेकानंद नगर, तेलियाबाग, वाराणसी से मुद्रित एवं ग्राम-लमही,पोस्ट-लमही, जिला-वाराणसी से प्रकाशित एवं संपादक राजीव गोंड

अनुक्रमणिका

प्रेमचंद प्रसंग-

महान कथाकार प्रेमचंद/डॉ० कमल किशोर गोयनका**/७**

कहानी-

संस्कारी बहू/डॉ० अनिता सिंह**/१५**

मेला/पारस नाथ झा/१७

चन्द्रकान्ता/डॉ० अनिता सुरभि/२५

''प्रेमान्त''/राजा सिंह/३५

कविता/गज़ले-

सुलगते अल्फ़ाज़/४५

अशोक अग्रवाल की गजले/४७

आलेख -

राज साहित्य और मनोविज्ञान का संबंध/डॉ0 सपना सिंह/55

नटनी उपन्यास का सौंदर्य/अनिता यादव/६५

कला सिनेमाः प्रारंभिक फिल्में और संस्थागत आधार/
डॉ० हरेन्द नारायण सिंह**/७१**

भूमण्डलीकरण के परिपेक्ष्य में हिन्दी भविष्य/
डॉ० रामसिंहासन सिंह**/ ७८**

भारत में उर्दू पत्रकारिता का इतिहास वह वर्तमान/ खान मनजीत भावड़िया मजीद**/८२**

साहित्य का अध्ययन और प्रयोग/उपासना श्रीवास्तव**/८६**

पुस्तक समक्षा-

रुदादे-सफर/विजय कुमार तिवारी/८९

संपादकीय

आज साहित्य पढ़ने में लोगों की दिलचस्पी घटती जा रही है। एक समय वह था कि हिन्दी में लिखे उपन्यासों को पढ़ने के लिए अहिन्दी के लोगों ने भी हिन्दी सीखी। आज यह दिलचस्पी घटती जा रही है। सामान्यतः सभी लोगों में पठनीयता का ह्रास हुआ है किन्तु इसका सर्वाधिक क्षरण हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र में हुआ है। यहाँ लोगों में साहित्यिक पुस्तकों को खरीद कर पढ़ने में कोई रूचि नहीं रह गई है। ऊपर से रही-सही कसर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने पूरी कर दी है। हिंदी साहित्य की पहुंच हमारे समाज में घटती जा रही है। घरेलू महिलाओं तथा बच्चों की दिलचस्पी पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों के बजाय अब टीवी चैनलों के सीरियलों, वीडियो गेम्स तथा इंटरनेट में हो गई है, जिससे आम पाठकों की तादाद में और भी गिरावट आ गई है, जबकि बच्चों में तेजी से ऑनलइन वीडियो गेम व कार्टून देखने आदत बढ़ रही है। कार्टून आजकल के बच्चों के दैनिक जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बनता जा रहा है। कार्टून देखने का अपना मज़ा और लाभ हैं, परंतु बच्चों को लुभाने वाला यह कार्टून जब एक नशा बन जाता है तब बात खतरनाक हो जाती है। कार्टून की आदत बच्चों के सामाजिक जीवन को प्रभावित करती है। वे अपनी उम्र के बच्चों के साथ आउटडोर गेम खेलना पसंद नहीं करते तथा इसके कारण वे सामाजिक जीवन से अलग हो जाते हैं। जब भविष्य में उन्हें समाज के साथ घुलने मिलने का मौका आता है तो उन्हें परेशानी होती है। एक अध्ययन से पता चला है कि कार्टून देखने की आदत से बच्चों की काल्पनिक शक्ति पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। बड़े शहरों में तो बाल यौन-शोषण के मामले भी सामने आ रहे हैं। यह उनके सामाजिक व्यवहार को भी प्रभावित करता है। अधिकांश बच्चे जिन्हें कार्टून देखने की आदत होती है, वे केवल स्क्रीन के सामने ही कुछ देखते हुए खाना खाते हैं। बच्चों को बचपन में खाने की जो आदतें पड़ जाती हैं वह पूरी उम्र उनके स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। कार्टून

की आदत बच्चों के सामाजिक जीवन को भी प्रभावित करती है। माँ बाप से ज़्यादा बच्चे तेजी से भौतिकता प्रेमी होते जा रहें हैं। कभी हमें भी टॉम जेरी पसंद आता था परंतु हमारे बच्चे उन कार्टून्स और वीडियो गेम्स के पीछे पागल हैं जो हिंसा पर आधारित होते हैं। इन कार्टून्स का बच्चों पर एक नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। डॉक्टरों का कहना है कि कार्टून के कारण वर्तमान समय में बच्चों की लाइफस्टाइल में काफी ज्यादा बदलाव देखने को मिल रहे हैं। उनकी फिजिकल एक्टिविटी पहले की तुलना में काफी कम हो चुकी है। इसके अलावा कई बच्चे अपने गलत खानपान के कारण मोटापे का शिकार हो रहे हैं, जिसकी वजह से उनमें हार्ट अटैक, मधुमेह एवं ब्रेन हैमरेज का तेजी से खतरा बढ़ रहा है।

साहित्य के अध्ययन से हमारी संवेदना का विस्तार होता है और हमारी सोच का दायरा व्यापक हो जाता है। हम समाज, राजनीति, समकालीन और आस-पास के परिवेश को और अधिक बेहतर समझने के योग्य हो पाते हैं। हम साहित्य के माध्यम से अनेक परिस्थितियों, घटनाओं, पात्रों के चरित्र के माध्यम से अनेक जिंदगियाँ जी पाते हैं। साहित्य से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से हमारे अनुभवों में वृद्धि होती हैं। वह हमें मनुष्य की लघुता एवं क्षुद्रता का अहसास कराता है तो वहीं मानव के सामाजिक एवं मानसिक विकास में सहायक भी होता है। कहीं न कहीं साहित्य हमें सही अर्थों में मानव बनाता हैं।

आज हमें विश्व साहित्य से परिचय अपने आने वाली पीढ़ी को कराने की आवश्यकता है। आप सभी सुधी पाठकों से अनुरोध है कि अपने आस-पास आयोजित साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यकमों और पुस्तक मेलों में अपने बच्चों को जरूर लेकर जाये।

राजीव गोंड
मो.9044798756

महान कथाकार प्रेमचंद

(उपेन्द्रनाथ अश्क जी से डॉ० कमल किशोर गोयनका की बात)

गोयनका:- प्रेमचंद से आपका परिचय कैसे हुआ? एक छात्र के रूप में या एक अदीब के रूप में? इस प्रथम परिचय का आपके मन पर क्या प्रभाव पड़ा?

अश्क :-मुझे ठीक सन् तो याद नहीं लेकिन मेरा खयाल है, मैंने कुछ कहानियां लिख ली थीं और छप भी गई थीं, जब मैंने प्रेमचंद को पढ़ना शुरू किया। मैंने १६३६ से, यानी जिन दिनों मै आठवीं-नवीं कक्षा में पढ़ता था, कहानी लिखना शुरू कर दिया था और मेरी कहानियाँ छपने भी लगी थीं। मेरी पहली कहानी पर तो उर्दू-मिलाप (लाहौर) के मालिक महाशय खुशहाल चन्द 'खरसंद' के सुपुत्र श्री रणवीरसिंह वीर का प्रभाव था, जो क्रांतिकारियों की काल्पनिक और रोमानी कहानियाँ लिखते थे, फिर मैंने सुदर्शन को पढ़ा और शायद उसके बाद प्रेमचंद को। उनकी पहली रचना कौन-सी पढ़ी, मुझे आज याद नहीं, लेकिन उनके पहले 'कथा-संग्रह' 'सोजेवतन' की कहानियां याद है। 'प्रेम-पच्चीसी' और 'प्रेम-बत्तीसी' की याद है। उनके शुरू के उपन्यास मैंने बी० ए० पास करते पढ़ लिए थे। इसके इलावा मैं यद्यपि उर्दू में लिखता था, लेकिन हिन्दी पढ़ लेता या और आर्य समाज (गुरुकुल) जालंधर की लाइब्रेरी में जाकर (जो मेरे घर से मील-डेढ़ मील दूर आर्य समाज सभा, अड्डा होशियारपुर के एक लम्बे आयताकार कमरे में स्थित थी और जहाँ तमाम हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं आती थीं) मैं विभिन्न पत्रिकाओं में छपनेवाली प्रेमचंद की कहानियाँ भी पढ़ा करता था आदर्शवादी सामाजिक कहानियां थीं। तब मैं भी वैसी ही कहानियां लिखता था।

प्रेमचंद के साहित्यकार से मेरा परिचय आठवीं-नवीं कक्षा तक ही हो गया था। मुझे उनके उपन्यासों के मुकाबले में उनकी कहानियां बहुत अच्छी लगती थीं। उनकी कई उत्कृष्ट कहानियां याद है। वे आदर्शवादी कहानियां स्वतन्त्रता- आन्दोलन के जमाने में बहुत अच्छी लगती थीं।

गोयनका :- प्रेमचंद से सम्पर्क करने और पत्र-व्यवहार आरम्भ करने की इच्छा किन परिस्थितियों और किन कारणों से हुई?

अश्क :- मुझे याद है, मैंने अपने किसी लेख में उस घटना का उल्लेख किया है, १९३१ की ही बात है। मैं बी० ए० करने के बाद कुछ महीने अपने स्कूल में अध्यापकी का अनुभव प्राप्त कर, और उस जीवन से विमुख होकर लाहौर गया